विश्व के एक अरब लोग हो जाएंगे बहरे!

डॉ. महेश परिमल

आजकल युवा अपने कान में ईयर फोन लगाए कुछ न कुछ सुनते रहते हैं। यह स्थिति ट्रेनों, बसों, मेट्रो के अलावा वाहन चलाते समय या पैदल चलते हुए युवाओं में देखी जा सकती है। कई दुर्घटनाएं इसी के चलते हुई हैं। पर ये संसाधन इन युवाओं के लिए कितने खतरनाक हैं, यह अभी तो नहीं, पर कुछ वर्षों बाद तब पता चलेगा जब पूरे विश्व के एक अरब से अधिक युवा बहरे हो जाएंगे।

शोर का यह सिलसिला ईयर फोन से शुरू होकर डीजे तक पहुंच गया है, पर अभी तक किसी ने यह ध्यान नहीं दिया है कि इतना अधिक शोर केवल कान के लिए ही नहीं, बल्कि स्वास्थ्य के लिए भी बहुत ही खतरनाक है। हालात यहां तक बेकाबू हो गए हैं कि गर्भस्थ शिशु में भी इसका खतरा बढ़ गया है। डीजे के भयानक शोर के बीच नाचते लोग यह नहीं समझ पा रहे हैं कि इतने शोर के बीच वे न केवल अपने आपको, बल्कि आने वाली पीढ़ी को भी बहरा कर रहे हैं। गणेश विसर्जन, दुर्गा पूजा आदि के समय शोर की पराकाष्ठा देखने को मिलती है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने तमाम शोरप्रेमियों को यह चेतावनी दी है कि यही हाल रहा, तो विश्व के 1.1 अरब लोग बहरे हो जाएंगे। संगठन के अनुसार इसकी शुरुआत हो चुकी है। पिछले कुछ वर्षों के भीतर ही दुनिया के 36 करोड़ लोग बहरे हो चुके हैं और यह संख्या लगातार बढ़ रही है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के मुताबिक मध्यम व उच्च आमदनी वाले देशों में 12-35 वर्ष के 50 प्रतिशत युवा अपने निजी ऑडियो यंत्रों के कारण और 40 प्रतिशत युवा मनोरंजन स्थलों पर होने वाले शोर से पीड़ित हैं।

ध्वनि की तीव्रता डेसिबल में नापी जाती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार कामकाज के स्थान पर आवाज़ की तीव्रता करीब 85 डेसिबल होती है। इतनी तीव्रता को एक आम इंसान 8 घंटे तक सहन कर सकता है। इतनी तीव्रता को सुरक्षित भी माना गया है। डिस्कोटेक, नवरात्रि एवं शादी के समय ध्वनि की तीव्रता बढ़कर 100 डेसिबल को पार कर जाती है। इतनी तीव्रता को इंसान अधिक से अधिक 15 मिनट तक सहन कर सकता है। इसके बाद उसके कान को नुकसान होता है। डीजे की आवाज़ पर घंटों नाचते लोग अपनी सामान्य स्थिति में नहीं रहते।

शोध से पता चला है कि तेज़ आवाज़ से गर्भस्थ शिशु भी प्रभावित होता है। यदि मां शोर वाली जगह में रहती है, तो बच्चा बहरा पैदा हो सकता है। 65 वर्ष से अधिक उम्र के 99 प्रतिशत लोग कान की तकलीफ से होकर गुज़रते हैं। विश्व के 5.6 करोड़ बुज़ुर्ग लोग बहरेपन से त्रस्त हैं। इसे दूर करने के लिए वे ध्वनिवर्धक यंत्रों का इस्तेमाल कर रहे हैं। विकासशील देशों में जितने यंत्रों की आवश्यकता है, उसके मात्र 3 प्रतिशत यंत्रों का उत्पादन हो रहा है।

दैनिक जीवन में यदि हम थोड़ी-सी सावधानी रखें, तो बहरेपन से बच सकते हैं। पर पीड़ादायी बात यह है कि तेज़ आवाज़ से होने वाले नुकसान के प्रति लोग गंभीर नहीं हैं। यदि हम ईयरफोन या हेडफोन का इस्तेमाल कर रहे हैं, तो इसकी आवाज़ धीमी रखकर बहरेपन से बच सकते हैं। यदि न चाहते हुए भी हमें शोर भरे इलाके से गुज़रना पड़ रहा है, तो कान में ईयर प्लग लगाकर जा सकते हैं। यदि घर या काम के स्थान पर संगीत सुनना हो, तो ऑडियो डिवाइज़ की आवाज़ को मर्यादित रखकर कान की रक्षा की जा सकती है।

अमेरिका की एपल कंपनी का नया आईपॉड बाज़ार में लाया गया, तो उसका उपयोग इतना अधिक होने लगा कि लोगों को समझ में नहीं आया कि इसकी तेज़ आवाज़ कान को नुकसान पहुंचा सकती है। उस आईपॉड के इस्तेमाल से हज़ारों लोग बहरे हो गए। लुसियाना के एक जागरूक नागरिक पीटरसन ने इसे लेकर एपल कंपनी से मांग की

कि इस आईपॉड के बॉक्स पर यह चेतावनी लिखी जानी चाहिए कि इसे अधिक सुनने से बहरापन आ सकता है। पीटरसन ने कंपनी से मुआवज़े की भी मांग की, पर आईपॉड से स्वयं पीटरसन को किसी तरह की शारीरिक हानि नहीं हुई थी, इसलिए वह केस हार गया।

फ्रांस में ध्वनि प्रदूषण के कानून बहुत ही सख्त हैं। उसके कारण एपल कंपनी ने फ्रांस के बाज़ार में जो आईपॉड और आईफोन भेजा, उसकी बनावट ऐसी थी कि उससे 100 डेसिबल से अधिक आवाज़ नहीं निकलती थी। भारत में कुछ कंपनियां मोबाइल की डिज़ाइन ऐसी बनाती हैं कि उसकी आवाज़ जब 100 डेसिबल से अधिक हो जाती है, तो मोबाइल स्क्रीन पर चेतावनी आती है कि इससे अधिक आवाज़ आपके कान को नुकसान पहुंचा सकती है। इस सूचना को यदि आप अनदेखा करते हैं, तो आपके कान को होने वाले नुकसान पर कंपनी की कोई जवाबदारी नहीं है।

जिन गर्भवती महिलाओं को संगीत सुनने का शौक है, यदि वे तेज़ आवाज़ में मोबाइल या आईपॉड से संगीत सुनती हैं, तो उसके गर्भस्थ शिशु को इसका भारी नुकसान हो सकता है। गर्भ में शिशु जब 24 सप्ताह का होता है, तब उसके कान का विकास होना शुरू हो जाता है। इसी दौरान ध्वनि के संकेत मस्तिष्क तक पहुंचने शुरू हो जाते हैं। यदि मां के गर्भ में 100 डेसिबल से अधिक आवाज़ पहुंचती है, तो बच्चे के कान को नुकसान पहुंच सकता है। शिशु का वज़न भी कम रह सकता है।

डीजे के साथ नाचने वालों को यह याद रखना होगा कि वे आज आवाज़ सुनकर जिस तरह से नाच रहे हैं, उनकी संतानों को यह सुख प्राप्त नहीं हो पाएगा क्योंकि वे कुछ भी सुन ही नहीं पाएंगी, नाचने की बात तो बहुत दूर की है।

कहा गया है कि संगीत से रोगों का इलाज संभव है। आजकल डॉक्टर भी ऑपरेशन के दौरान संगीत थेरेपी का इस्तेमाल करने लगे हैं, पर यह धीमे और मधुर संगीत की बात है। शोर स्वास्थ्यवर्धक नहीं होता। ***(स्रोत फीचर्स)***

इस अंक के चित्र निम्नलिखित स्थानों से लिए गए हैं -

page 02 - http://www.euractiv.it/images/content/euractiv/74/7480-moneta-elettronica-studio-i-com-no-a-taglio-commissioni-interbancarie
page 04 - http://searchengineland.com/figz/wp-content/seloads/2014/07/google-logo-blue2-1920.jpg
page 05 - https://encrypted-tbn1.gstatic.com/images?q=tbn:ANd9GcSeSkgHCR30K-VnFGalkpK8qphkk-odhK56RjYOKTe2S2IYeRaAnA
page 11 - http://www.kalliopimonoyios.com/images/lg/PAWDrosophila-610Monoyios.jpg
page 13 - http://i.guim.co.uk/static/w-620/h--/q-95/sys-images/Arts/Arts_/Pictures/2015/2/3/1422957147728/Jobseekers-allowance-007.jpg
page 17 - https://whoiskimmy.files.wordpress.com/2012/08/3d2.jpg
page 20 - http://www.meelec.com/v/vspfiles/files/UserManuals/images/manual8.jpg
page 24 - http://phenomena.nationalgeographic.com/files/2015/07/Warnowiid.jpg
page 29 - https://indomahseer.files.wordpress.com/2010/01/tor_tambroides_2x.jpg
page 33 - http://i.telegraph.co.uk/multimedia/archive/02358/Dale_Rogers_crocod_2358935b.jpg
page 34 - http://khusela.com/wp-content/uploads/2013/06/Danakil-Depression-02.jpg
page 31 - http://archives.deccanchronicle.com/sites/default/files/crocodile-ap-0702adfadf_0.jpg
page 35 - http://preservationstate.com/wp-content/uploads/2015/01/left_handed.jpg
page 37 - http://i.telegraph.co.uk/multimedia/archive/02247/snail_2247464b.jpg